Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

"Charvaka Epistemology"
(चार्वाक का ज्ञानशास्त्र)

'चार्वाक' नास्तिक, अनुभववादी, प्रत्यक्षवादी तथा सुखवादी दर्शन है। चार्वाक शब्द के मूल अर्थ का पता नहीं होने के कारण विद्वानों के बीच इसके शाब्दिक अर्थ को लेकर मतभेद है।

कुछ विद्वानों के अनुसार 'जड़वाद' के प्रवर्तक 'चार्वाक' नामक एक ऋषि थे जिनके अनुयायी भी 'चार्वाक' कहलाए। दूसरे विद्वानों के अनुसार इस दर्शन में खाने, पीने पर अधिक जोर दिया गया है इसलिए इसका नाम 'चार्वाक' पड़ा। चार्वाकों का कहना था — 'Eat, drink and be merry.' अन्य विद्वानों के अनुसार इस दर्शन में सुन्दर तथा मधुर वचनों का प्रयोग होने के कारण इसे 'चार्वाक' की संज्ञा से विभूषित किया गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि बृहस्पति ने दानवों के नाश के लिए 'चार्वाक' मत का प्रचार इनके बीच किया।

खैर, भारतीय 'जड़वाद' के प्रवर्तक जो कोई भी हों, वर्तमान समय में 'चार्वाक' 'जड़वाद' का पर्यायवाची शब्द हो गया है। जड़वाद को 'लोकायतमत' भी कहते हैं क्योंकि यह इस लोक में ही विश्वास करता है।

'चार्वाक' दर्शन पूर्णरूपेण प्रमाण विज्ञान पर आधारित है। चार्वाक के अनुसार "प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।" इसके अनुसार केवल इन्द्रियों के द्वारा ही विश्वास योग्य ज्ञान प्राप्त हो सकता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए तीन बातों का रहना

आवश्यक है (i) इन्द्रिय (ii) पदार्थ (iii) सान्निकर्ष। प्रत्यक्ष ज्ञान निर्विवाद तथा सन्देह रहित होता है इसलिए चार्वाक कहते हैं —

'प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्'

'चार्वाक' ने अनुमान तथा शब्द जैसे मुख्य प्रमाणों का खंडन करते हुए 'प्रत्यक्ष' को ही एकमात्र प्रमाण माना है।

अप्रत्यक्ष ज्ञान को ही अनुमान कहते हैं। चार्वाक के अनुसार अनुमान प्रमाण नहीं हो सकता है क्योंकि —

प्रत्येक अनुमान व्याप्ति पर आधारित है। चार्वाकों का कहना है कि अनुमान तभी यथार्थ तथा निश्चयात्मक हो सकता है जब व्याप्ति वाक्य सर्वथा निःसन्देह हो क्योंकि व्याप्ति वाक्य में ही लिंग का साध्य के साथ पूर्ण व्यापक सम्बन्ध स्थापित रहता है।

जैसे — जितने धूमवान पदार्थ हैं वे सभी वह्निमान हैं।
पर्वत धूमवान है।
अतः पर्वत वह्निमान है।

ऐसा हम तभी कह सकते हैं जब हम सभी धूमवान पदार्थों को और उनके साथ वह्नि के सम्बन्ध को भी देख सकें। किन्तु यह सर्वथा असंभव है, प्रत्यक्ष का क्षेत्र अत्यन्त सीमित होता है। अतः हम प्रत्यक्ष के द्वारा व्याप्ति की स्थापना नहीं कर सकते हैं इसलिए अनुमान सन्देहात्मक हो जाता है।

क्योंकि यह व्याप्ति पर निर्भर करता है।
(ii) व्याप्ति वाक्य की सत्यता हम अनुमान के द्वारा भी नहीं प्रमाणित कर सकते हैं। क्योंकि जिस अनुमान के द्वारा हम इसकी स्थापना करेंगे उसकी सत्यता भी तो व्याप्ति पर ही निर्भर करती है। इसप्रकार अन्योन्याश्रय दोष (Petitio principii) उत्पन्न हो जाता है क्योंकि व्याप्ति अनुमान पर निर्भर है और अनुमान व्याप्ति पर निर्भर है।
(iii) शब्द के द्वारा भी व्याप्ति की स्थापना नहीं की जा सकती क्योंकि शब्द की सत्यता अनुमान पर अवलम्बित है। अतः शब्द के विरुद्ध जो भी दोष उत्पन्न होते हैं वही अनुमान के विरुद्ध उत्पन्न होते हैं। यही कारण है कि हम अनुमान को प्रमाण नहीं मान सकते हैं क्योंकि—
1. चार्वाक के अनुसार शब्द से प्राप्त जितने भी ज्ञान हैं, वे सभी अनुमान सिद्ध हैं। किसी भी शब्द को हम इसलिए मानते हैं कि वह विश्वास योग्य होता है। अतः शब्द से ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुमान की आवश्यकता होती है। जैसे — सभी विश्वास योग्य व्यक्तियों के वाक्य मान्य हैं।
यह विश्वास योग्य व्यक्ति का वाक्य है।
अतः यह मान्य है
चूँकि शब्द के द्वारा प्राप्त ज्ञान अनुमान पर अवलंबित होता है। इसलिए शब्द की प्रामाणिकता इसीप्रकार संदिग्ध हो जाती है जिसप्रकार अनुमान की।
(ii) शब्दज्ञान सर्वदा

LIC

हमें सत्यज्ञान नहीं देता है। शब्द कभी सत्य होते हैं तो कभी असत्य। इसलिए शब्द को भी हम प्रमाण नहीं मान सकते हैं।

(iii) यद्यपि शब्द प्रत्यक्ष पर आधारित है फिर भी चार्वाक इसे प्रामाणिक नहीं मानते हैं क्योंकि साधारण शब्द से ईश्वर, स्वर्ग, नरक जैसे अप्रत्यक्ष वस्तुओं का बोध होता है। अप्रत्यक्ष वस्तुओं का ज्ञान देने के फलस्वरूप शब्द को प्रमाणिक कहना भूल है।

(iv) 'चार्वाक' एक वेदविरोधी दर्शन होने के फलस्वरूप इसने वैदिक शब्द के विरुद्ध आक्षेप किया है। चार्वाक के अनुसार वेद विरोधपूर्ण युक्तियों से परिपूर्ण है। वेद में कुछ ऐसे शब्द हैं जो निरर्थक, व्याघातक, अस्पष्ट तथा असंगत हैं।

वेद की रचना ब्राह्मणों ने अपने जीवन निर्वाह के उद्देश्य से किया है। धूर्त ब्राह्मणों के द्वारा निर्मित वेद में विश्वास करना अपने आपको धोखा देना है।

चार्वाक ने वैदिक कर्मकाण्ड को कल्पना पर आधारित माना है। वेद में ऐसे यज्ञ के विधियों का वर्णन है जो अनन्त हैं, अश्लील तथा काल्पनिक हैं। वहाँ ऐसे-ऐसे परिणामों की चर्चा है जो अप्राप्य हैं। वेद में एक स्थल पर जिन विधियों की सराहना की गयी है,

LIC

उन्हीं ऋषियों का दूसरे स्थान पर खण्डन हुआ है।

पुजारियों को फल/कोष देने की प्रथा पर आलोचना और खोजती है जो यह प्रमाणित करता है कि वेदों की स्थायिता कितनी स्वार्थी और धूर्त था। इन्हीं सब कारणों से 'चार्वाक' वेद को मानवीय रचनाओं से भी तुच्छ समझता है क्योंकि यह ईश्वर की सत्ता में अविश्वास करता है।

चूँकि यह सिद्ध नहीं हो सकता कि अनुमान, तथा शब्द विश्वास योग्य है, इसलिए 'चार्वाक' के अनुसार 'प्रत्यक्ष ही' एकमात्र प्रमाण है। चार्वाक के कथन का जब हम विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि चार्वाक स्वयं अनुमान का प्रयोग करता है। इसका यह कथन कि प्रत्यक्ष ही ज्ञान का एक मात्र साधन है तथा अनुमान और शब्द अप्रमाणिक है अनुमान का ही फल है। इनका यह विचार कि चेतना भौतिक तत्व का गुण है स्वयं अनुमान से प्राप्त होता है। चार्वाक के अनुसार आत्मा और ईश्वर का अस्तित्व नहीं है क्योंकि वे प्रत्यक्ष की सीमा से बाहर है, स्वयं अनुमान का फल है। एक ओर, चार्वाक अनुमान का खंडन करता है और दूसरी ओर वह अनुमान का स्वयं उपयोग करता है। अतः यहाँ विरोधाभास उत्पन्न हो जाता है।

अनुमान के अतिरिक्त चार्वाक ने शब्द को अप्रमाणिक माना है यह भी अनुचित है क्योंकि हमें अनेक वस्तुओं का ज्ञान दूसरे से सुनकर तथा

अनेक प्रत्यक्षों के अनुमान से प्राप्त होते हैं। यदि अनुमान को ज्ञान का साधन नहीं माना जाएगा, तो हमारे ज्ञान का क्षेत्र सीमित हो जायेगा।

चार्वाक का वेद-विरुद्ध विचार भी पक्षपातपूर्ण है। चार्वाकों का यह सोचना कि धूर्त ब्राह्मणों ने वेद की रचना जीविकोपार्जन के उद्देश्य से की है, बिल्कुल गलत है। क्योंकि वेद उन महर्षियों के कथन हैं जिनमें स्वार्थ और पक्षपात की भावना का अभाव था। उनमें जीविकोपार्जन तथा सांसारिक सुखभोग की अभिलाषा नहीं थी क्योंकि वे तपस्वी एवं बुद्धिमान थे।

चार्वाक ने प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का एकमात्र साधन माना है। उनके अनुसार प्रत्यक्ष निश्चित एवं सन्देह-रहित होता है। यह बात ठीक नहीं लगती। क्योंकि, हमारे अनेक प्रत्यक्ष गलत निकलते हैं। जैसे - सूर्य छोटा दिखाई देता है परन्तु वह बहुत ही विशाल है। पृथ्वी चिपटी दीख पड़ती है परन्तु हम जानते हैं कि यह गोल है। इससे सिद्ध होता है कि प्रत्यक्ष सदैव यथार्थ ज्ञान नहीं प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त यदि प्रत्यक्ष को ज्ञान का एकमात्र साधन माना जाय, तो ज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त ही सीमित हो जायगा।

अतः चार्वाक के अनुसार मात्र 'प्रत्यक्ष ही प्रमाण है' यह मानना भ्रान्तिमूलक है।